કિંકર પુષ્પમાળા પુષ્પ ચૌદમું



જ્યોતિનાં કિરણો

યાને

ભક્તિરસ કાવ્યો



જયંતિમહોત્સવ પ્રસંગે

卐

રચયિતા

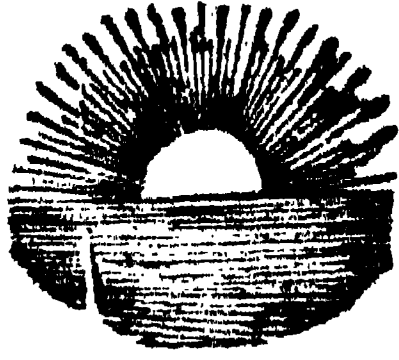
પ્રોફ.

કિંકરદાસ

મૂલ્ય રૂ. ૦–૬–૦



किंकर पुष्पमाळा पुष्प चौदमु



ज्योतिनां किरणो

यानि

भक्ति रस काव्यो

[जयंति उत्सवना मंगळ प्रसंगे]

रचयिता
किंकरदास
फतासानी पोळ : नविपोळ
अमदावाद

मूल्य ०-२-०

प्रत...... १०००

लेखक अने प्रकाषक

किंकरदास फतासानी पोळ

नवि पोळ : : : अमदावाद

संवत १९९६ माघ शुकलपक्ष

मुद्रक :

केशवलाल सांकळचंद शाह

धी वीरविजय प्रीन्टींग प्रेस

रतनपोळ, सागरनी खडकी

: : : : अमदावाद : : : :

जयंतिउत्सवना मंगळ प्रभाते

झूकीपडो

झूकीन्यो ! झूकीन्यो ! विभूति जड़ी छे
अमर बागनी ए अमोली कळी छे
मूरख ! शोधतो तो श्रमे सांपड़ी छे
अजब ! रोगनी चोटीमां जड़ हळी छे

१

सूंघीन्यो ! सूंघीन्यो ! सुवासे भरी छे
सुधा पहाडने पर्वतोनी जड़ी छे
परम पुन्यने कर्म योगे मळी छे
असारी हमारी उपाधि टळी छे

२

कूदीन्यो ! कूदीन्यो ! अमर टेकरी छे
विजय पामवानी भूमीका जड़ी छे
सरिता अमल प्रेमनी त्यां भरी छे
जीवन शुद्धिनी औषधी सांपड़ी छे

३

लूटीन्यो ! लूटीन्यो ! अजब ! तक मळी छे
गजब ! आत्म धननी तिजोरी भरी छे
कहे **दास किंकर** जड़ी छे जड़ी छे
भूल्याती हमारी कदापि नहि छे

छोरु

किंकरदास

पतितपावन योगी

कवाली

आबु पर्वत गजावे अरे योगी तुं
दिव्य दैवत बतावे अरे योगी तुं
सारी दुनिया नचावे अरे योगी तुं....१

पहाडने भेखडोमां करे ध्यान तुं
शांतिरसनु पीलावे अजब पान तुं
मारा मनथी मनायो जीगरजान तुं....२

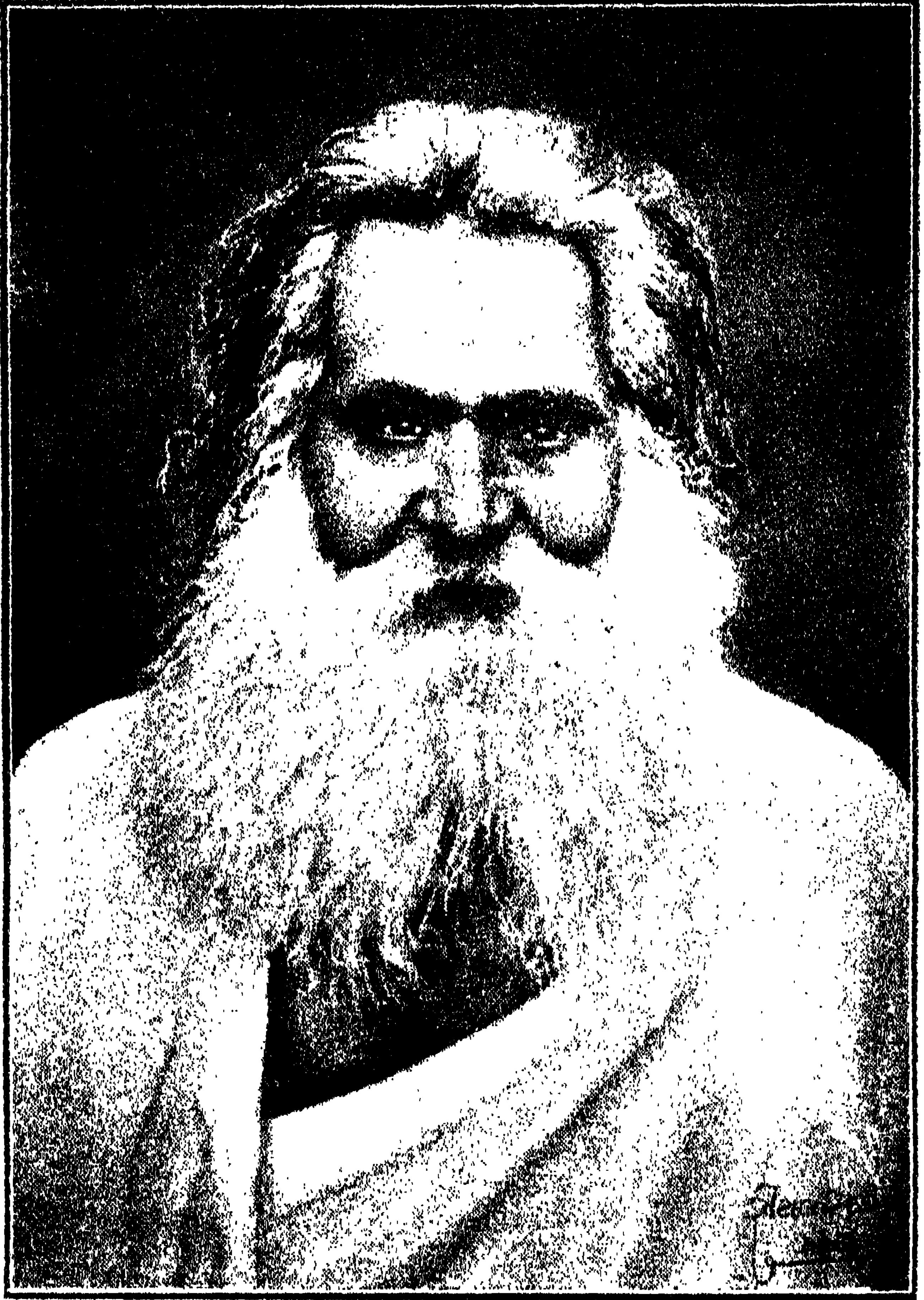
ज्योत जगमां जगावे अरे योगी तुं
रोग भवना भगावे अरे योगी तुं
प्यास जगनी छीपावे अरे योगी तुं....३

प्रेम झरणां व्रषावे अरे योगी तुं
आग मननी बुझावे अरे योगी तुं
भक्ति झोले ञूलावे अरे योगी तुं....४

आशावादीने आशे फळे योगी तुं
भक्ति करवाथी संकट हरे योगी तुं
दासकिंकर गुजारे अजब योगी तुं....५

काव्योनी अनुक्रमणिका

पतितपावन योगी



अधर्मोद्धारक गुरुदेव भगवंत
श्रीविजयशांतिसूरिश्वरजी

समर्पण

पर्वतोनी खीणो अने गीरी गुफाओमां रमण करता !

अरण्य जंगलो अने घनघोर वृक्षोमां घूमता !

निर्जर अने भयानक स्थानोमां निज्ञानंद लूंटता !

मृत्युना भयने ध्याननी जंजीरथी हणीनांखी
मुक्तिना अविचळ पंथे झझूमता !

आत्मानी अखंड मस्तीथी विश्वनी चोतरफ दिव्य
रोशन झळकावता !

म्हारा पतित पावन प्रभु गुरुदेवभगवंत

श्री..........श्री..........श्री

ना करकमळमां आ पुष्प सहर्षे समर्पुं

छोरु

किंकरदास

निवेदन

अनादरा मुकामे मित्रोना प्रेमझोलामां झूलतां याने ए म्हारा पतित पावन प्रभु गुरुदेव भगवंत....श्री....श्री ....श्री....ना अमर बगीचानी भक्ति सुवास म्हेकतां जयंति महोत्सवनो अद्वैत प्रसंग नजीक आवतो होइ कंइपण नविन आलेखन करवानी आंत्रिक जिज्ञासा अपूर्व वेगे जाग्रत थवा मांडी.

गुरुदेव भगवंत....श्री....श्री....श्री....नी दिव्य कृपाए मारा मनोमंदिरमां उर्मी प्रवेशी अने मारी कलमने लेखन क्रियामां आगे धपावतां आंत्रिक प्यासने छीपावी.

अमदावाद मुकामे अपूर्व प्रेमनी धारा वर्षावतां जे पुष्प तैयार कर्युं हतु तेने प्रसिद्ध करवा मित्रोए अत्यंत प्रेरणा अने सहानुभूति दर्शाववाथी ज्योतिनां किरणो याने भक्ति रस काव्योनु आ नानकडु पुष्प जनसमूहमां प्रसिद्ध करवा भाग्यशाळी निवडयो.

मारा श्रमने यथार्थ बनाववामां जे जे मित्रोए प्रेम गंगामां स्नान करावी मने पावन बनाव्यो छे ते मित्रोनो उपकार कदापि ना भूलुं. पतित पावन प्रभु ए मित्रोनो प्रेम यशस्वी बनावे अने आ भिक्षुक किंकरने सदाने माटे भक्ति झोलामां झूलावे एटलीज भिक्षा याचतां विरमु.

फतासानी पोळ
नविपोळ
अमदावाद
माघ शुकलपक्ष
संवत १९९६

सर्वनो स्नेहांकित
छोरु
किंकरदास

अनादरानो स्नेह उत्सव

मित्रोनी प्रेमसुधाने

वसंत तिलकाछंद

अज्ञानना तिमीरमां ज्योति जगावा
आव्यो हतो अरेरे ! अमहंस न्हावा
त्यां मित्र प्रेम रसना सागर ब्रषाया
जळपानथी जीवनमां उर्मी जगाया—१

गंगाब्रषी हृदयथी जळधार रेली
व्याधि अने उपाधी घट बहार ठेली
स्वप्नां लूंटयां अजब ! आजे शुं बन्युं आ
तेनी समज अरेरे ! कदीये पडे ना—२

आहा ! तिमीर भाग्यो घट ज्योतजागी
भक्ति अने भजनमां जय धून लागी
मित्रे मळी मधुरा स्वादो चखाडया
अंतर क्षुधा मटाडी हरषे जमाडया—३

सरोवरतणा किनारे नित्ये जताता
शांति सुधातणो त्यां रस लूंटताता
आकाश सूर्य तपतो वन वृक्ष छाया
गोवाळ आवता त्यां गौने चरावा—४

आहा ! त्रिलोक त्हारी झांखी नती ज्यां
अणधार पंथ भेटयो जळ उभयाँतां
भक्ति सुवास म्हेकी मन वासतुं तुं
वार्जीत्रनी कळाथी वन गाजतुं तुं—५

वृक्षो अने गगनमां जयनाद थातो
जे कल्पनानती ते रस उभरातो
भूलतो नहि कदापि तुज दासने तुं
सहु स्नेही बंधुओने घट राखजे तुं—६

आहा ! अनादरामां दवलुं बन्युं आ
निरख्युं कदी न तुं ते नयने वतावा
स्वप्नु अहो वितायुं त्रीश दीन केरुं
अद्वैत तान झरतां निरख्युं अनेरुं—७

सहु स्नेहीए मळीने हरषे झूलाव्यो
भक्तितणा हिंचोळे हरषे हुलाव्यो
मित्रो कदी तमोने घटथी भूलुं ना
निश्चय तमो कदापि मुजने भूलोना—८

निसर्यो अरे ! नयनमां जळ उभरायां
मित्रे मळी विरहथी मनने रडायां
ओ ! प्राणनाथ शांति ! शांति ! वषावो
तुम बाळ दासकिंकर चरणे झूलावो—९



ज्योतिनां-किरणो

नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते,

ए पतित पावन योगीने कोटानुकोटि नमस्ते.

ज्योति झगमगी छे आ विश्वमां जेनी,
ज्योति झळहळ छे आ विश्वमां जेनी.
ज्योति खळभळी छे आ विश्वमां जेनी,
ज्योति कमकमी छे आ विश्वमां जेनी.

क्यां ?

मानवना मंदिरमां झळकी
पक्षीना पिंजरमां झळकी
अनाथना अंतरमां झळकी
पतितना हैयामां हरखी
वन वृक्षोने पहाड गजवती
सोहम् सोहम् नाद बजवती
प्रेम तणां ए पुष्प खीलवती
घट मंदिरमां ज्योत जगवती

ज्यां विश्व वात्सल्यनो झरो उभरायो छे
ज्यां शांतिनो सागर रेलायो छे
ज्यां मैत्रि भावनो प्रकाश झघायो छे
ज्यां चैतन्य घन पुर्ण रुपे छवायो छे

एवो वीर योद्धो क्यां छे ?

पर्वतना अरण्य जंगलोमां
पहाडो अने गीरी गुफाओमां
घनघोर वृक्षो अने भेखडोमां
कुदरतनी शीत झरती छायामां

वन वगडामां धून धखावी
कर्म रिपुनी खाख बनावी
क्षमा सूत्रनी माळ भजावी
शांति सुधा घटमां उभरावी

शा माटे ?

आत्म समाधि लेवा माटे
भवभवनां दुःख हणवा माटे
संत दिपक प्रगटावा माटे
निजानंद लूंटवाने माटे

मोंघी मुक्ति पुरीनी आशा
तुंही तुंहीनी एक पिपासा
प्रभु प्रभुनी मनमां प्यासा
एकज आशा एकज आशा

राय अने महाराय झूकावे
रंक अने धनवान झूकावे
उंच नीच सहु शरणे आवे
शांति तणा झोळे हुलरावे

आवो तपस्वी योगी कोण छे ?

आबु पर्वतमां ए वसतो
निजानंद मस्तीमां हसतो
ध्यान करी कर्मोने पीसतो
मुक्ति सडकनो शोधे रस्तो

आबु पर्वतनो ए योगी
कोइ कहे जंगलनो जोगी
मायानो ए कदी न भोगी
संत पुरुषनी ओळख मोंघी

एकलडो ए पहाड गजावे
सोहम् सोहम् उरमां ध्यावे
मस्त जीवनना नाद बजावे
घट मंदिरमां धून धखावे

आ बधुं कोना माटे ?

जेणे आत्माथी जाण्युं होय, निहाळ्युं होय, अने अनुभव होय तेवा जीवात्माओना माटे.

आटली वर्धा एनी अमर प्रतिभा ?

आ वीर योद्धानी बाल्यवयनी ओळख जरा समजावशो

आहिर ज्ञात महि ए जनम्या
गाम मणादर नगरे प्रणम्या
वसुमात नंदन कहेवाया
भीमतोलाना रत्न गवाया

वनवगडामां उर्मी जागी
संत बनु ए लगनी लागी
आठ वरसमां ग्रहने त्यागी
माया ममता मनथी भागी

आठ वरस अनुभवनी धारे
काम क्रोधने मनथी मारे
संत थवाना उंच्च विचारे
संयम पंथ कहातो भारे

निश्चय मन मंदिरमां कीधो
ज्ञान कटोरो घटमां पीधो
संत तणो मारगडो लीधो
मुक्ति पुरीनो निश्चय कीधो

दिक्षा महोत्सव

निहाळो ! निहाळो ! निहाळो !

ए आत्मदिक्षा उचरे छे अने विश्वना साधु बने छे.

आत्म-भावना

मुमुक्षो श्रवण करो !

हरिगीत छंद.

हुं जाउं छुं हुं जाऊं छुं
त्यां कोइ पण नहि आवशो
मस्तो तणा ए महेल छे
कायर नहि त्यां फावशो १

ए धून छे विरलातणी
निश्चय विना नहि आवशो
मुक्ति तणो ए पंथ छे
भक्तिसुधा रेलावशो २

संसार नाम असार छे
माया जीवनथी मारशो
मृत्यु भीति नहि होय तो
घटमां प्रकाष झगावशो ३

हुं कोण ने क्यांथी थयो
ए शोधमां हुं निसरुं
मुज ज्ञात नहि मुज जात नहि
हुं आत्मपंथे विचरुं ४

स्नेहि नहि मित्रो नहि
हुं एकलो हुं एकलो
नव कोइ मारुं जगतमां
हुं एकलो हुं एकलो ५

हुं संत विश्वतणो बनुं
मुज आत्मनो साधक थवा
वनवासने पहाडो महि
विचरीश मनने साधवा ६

कर्मो सतावे कारमां
ए ख्याल मनमां नहि करुं
सोहम् तणा स्वप्ना मही
भवभयतणां दुःखडां हरुं ७

निश्चय कदापि नहि चूकुं
हुं आत्म मस्तीमां झूकुं
मुक्ति बिरुदने पामवा
मारी प्रतिज्ञा नहि चूकुं ८

चैतन्य घन ! चैतन्य घन !
आनंद घन ! आनंद घन !
करशुं नमन ! करशुं नमन !
करशुं नमन ! करशुं नमन ! ९

वर्षो सुधी महान् तपश्चर्या आरंभी मौन व्रत साथे पहाडो अने गीरिगुफाओमां रात्रि अने दिवस मृत्युनो सामनो करी निजानंद लूंटवा ध्याननी भट्ठीमां कर्म समूहनो खाख करी मस्ती पुष्प खीलाव्युं.

आ वीर योद्धानुं शुभ नाम दर्शावशो ?

नाम थकी ओळख नहि थावे
वेष दीसे नहि ज्योत बतावे
विविध रुपे ए नजरे आवे
भक्तिवान भीतरमां ध्यावे

भक्ति सरोवर नित्य वहावे
ए नर एनी ओळख पावे
मायावादी कदी न फावे
भान भूली जगमां भटकावे

माया एनी अकळ कहावे
आतम दर्शन नहि बतावे
रात दिवस एना गुणगावे
मन शुद्धि विण कदी न फावे

म्हारुं त्हारुं मनथी त्यागे
अवर थकी जे आगे भागे
लगन भीतरमां एनी लागे
मन मंदिरमां ज्योती जागे

घट मंदिरमां प्रभु विराजे
तुंही तुंहीनी नोबत गाजे
गुरु गुरुमां चित्तडु लागे
गुरु कृपाथी भवभय भागे

गुरु कृपा विण कंइ नहि पावे
सद्गुरुवरनी ओळख थावे
घटमंदिरमां धून धखावे
ए नर मुक्तिपुरीमां जावे

अनुभव ज्ञान अजब कहेवायुं
ए विण जगमां कोइ न फाव्युं
किंकर घटमां एज मनायुं
शांति दिपकनु तेज छवायुं

ए वीर योद्धानु शुभ नाम-

पतित-पावन-योगी

गुरुदेव भगवंत श्रीविजय शांतिसूरीश्वरजी

अरे ! आ बधी धामधूम आजे शानी छे ?

जयंति महोत्सव ! जयंति महोत्सव ! जयंतिमहोत्सव !

झांझर झणकार करे
बालुडां नाच करे
रुमझूम रणकार करे
अलबेलां तान वरे

आजे संवत-१९९६ ना माघ शुद ५ वसंत पंचमीना रोज तेओश्रीनी पचास वरसनी वय पूर्ण थाय छे. तेओश्रीनो जन्म दिन संवत १९४६ना माघ शुद पंचमी. आजे तेओश्रीनो जयंति महोत्सव उजवाय छे, बाळकना हृदयमां आनंदना सागर वृषाय छे, अने हरेकना रोममां ज्योतिनां किरणो झळकाय छे अने अद्वैत तानमां भक्तिरस लूंटाय छे.

नाचो ! नाचो ! नाचो !

ओ विश्वनां बालुडां खूब नाचो !

भक्तिभर्या सागरमां खूब झीलो ! तमारा रोमने पखाळो अने आजना दिव्य प्रसंगे जयंति महोत्सवना गगनभेदी गान-तान अने ध्यानमां मशगुल बनी ए आपणा पतित पावन योगीना चरणे जीवन नैयां झूलावो.

बहेनीओ आवो !
माताओ आवो !
बालुडां आवो !
वृद्ध वडीलो आवो !

आजे आपण सर्वे संगमां भक्तिरसनो आनंद लूंटीए.

पक्षीओ तमे पण सांभळजो !
वृक्षो तमे पण सांभळजो !
पावन थजो ! पावन थजो !

आजनो दिव्य नाद श्रवण करी जगत भरना प्राणीओ पावन थजो !

जळमां, स्थळमां पहाडमां, पत्थरमां, वृक्षमां, ज्यां ज्यां निहाळो त्यां एनु ज्योतिमय स्वरुप भासी रह्युं छे.

" ए आपणो अने आपण एना "
एज माता एज पिता
एज कुटुंब एज लक्ष्मी
एज वैभव अने एज खजानो
एज सर्वस्व ब्रह्मज्योतिमय स्वरुप.

—पतित पावन योगीनां बोध वचनो—

कंगालमां कंगाल मनुष्यमां पण दिव्यता गुप्त पणे बेठेली छे हुं अंदरने पूजनारो छुं!

वस्तुनु पीछान करवानु पुस्तको द्वारा थइ शके पण पुस्तकोनुं ध्येय ते ज आत्मज्ञान! ज्ञाननी हद ते परमपद!

तत्त्वने समज्यो नथी त्यां सुधी उपर उपरनी बधी एकटींग छे!

जे सत्य छे ते मारो धर्म छे. बहारनो तकलीफ शी विसादमां? अंदरनी शांति वगर बधुं नकामुं छे।

विवेकानंद ए पंडित हता, अने स्वामिराम ए जबरजस्त आत्मार्थी हता!

प्रवृत्तिमांथी निवृत्ति ल्यो एटले निवृत्तिमय प्रवृत्ति करो.

बनी शके तो तमारा जीवनथी अने छेवटे तमारा विचारोथी बीजाने पवित्र करो!

महानुभाव! मारे जे जोइए छे ते तारी पासे नथी अने तुं कृपा करीने मने आपवा मागे छे तेनी मने परवा नथी!

विश्व मारुं मित्र छे अने हुं सौनो मित्र छुं!

हुं त्यागी छुं ते भावनानो त्याग तेज साचो त्याग कही शकाय !

शांतिमय जीवन एज खरुं जीवन छे ! एकांतमां आनंद छे, आत्ममस्तिमां परमसुख छे !

मनुष्यनु जीवन एहवुं होय के जेनी देवताओ पण यात्रा करवा आवे एटलुं जीवन जीवजो !

सौ आत्माने शुद्ध करवा मथजो !

क्षमापना.

पतित पावन प्रभुना चरणकमळमां

ओ प्रभु !

शुं लखुं ? शुं बोलु ? शुं वदुं !

लखतां कलम कंपाय छे, बोलतां जीभ धृजवाट करे छे अने वदतां विषय कषायमां मस्त बनेल आत्मा नशामंध दशामां गोथां खाइ रह्यो छे.

प्रभु ! तु त्यागी अने हुं रागी ! तुं खाखी अने हुं स्वाखी ! तुं सद्गुणी अने हुं दुर्गुणी ! तुं परमात्मा अने हुं पापात्मा ! तुं निरंजन अने हुं रंजन ! तुं निराकार अने हुं साकार ! मारा जीवननो अंत केम आवे ? भवसागरमां हिंडोळे चडेलु मारुं नाव पार केम पामे ? आशा अने तृष्णाना गाढ बंधनमां घवायो छुं, संसारसागरमां झोलां खाउं छुं, मोह सैन्यमां झपाझपी करी रह्यो छुं, पळे पळे दोषित बनतो जाउं छुं, विषयनी अंधमस्तीमां पटकायो छुं, नरकनी नराधम वेदी ऊपर अनेक नृटकांड भजवी रह्यो छुं, भव भ्रमणानी दुष्ट खाइमां पटकायो छुं, पुत्रमित्र अने कुटुम्बमां पागल बन्यो छुं, मारुं मारुं करी बेल बनी रात अने दिन चक्की पीसी रह्यो छुं,

निजनुं भान भूल्यो छुं, काळचक्रना पंजामां फसेलो होवा छतां नाशवंत मायानी पाछळ गेबी पाशा खेली रह्यो छुं.

प्रभु ! हुं अति दुष्ट छुं ! क्रूर छुं ! कलंकी छुं ! निष्ठुर छुं ! नराधम छुं ! निर्लज्ज छुं ! आ पापीनो उद्धार केवी रीते थाय ? तारा शिवाय कोइ शरण नथी. तुं दीनपाळक, दीन कृपाळ, दीनदयाळ दीनबंधु, दीनदातार, दीनानाथ, कृपासिंधु, परब्रह्म परमात्मा छुं.

प्रभु ! तुंज माता तुंज पिता तुंज कुटुम्ब, तुंज लक्ष्मी अने तुंज सर्वस्व छुं. मारा अनंत दोषोने माफ करी तारो चरण स्पर्शी बनाव.

दयाकर ! दयाकर ! ओ पतितपावन प्रभु ! दयाकर.

हवे क्यां जाउं ! क्यां जइने रडु ! तारा शिवाय मारा दुःखनां आंसु कोइ लूछे तेम नथी. भवसिंधुमां भ्रमण करती मारी नैयाने पार उतार !

ओम् शांति ! ओम् शांति ! ! ओम् शांति ! ! !

जयंति महोत्सव प्रसंगे

गीत पहेलुं

राग—शांतिसूरीगुरुवरजी तुमसे कोटी नमन

मोंघेरा भगवान जयंति उजवीए
मनमंदिरना प्राण जयंति उजवीए–ए टेक
प्रीतम प्रभुजी आप हमारा
तुंही तुंही नयनोना तारा
अनाथना आधार जयंति उजवीए–१
वनवृक्षोनी अनुपम छाया
मोर अने कोयल टहुकाया
वायुना थनकार जयंति उजवीए–२
सुवर्ण महोत्सव आज प्रभाते
विध विध तान मही सहु नाचे
झांझरना झणकार जयंति उजवीए–३
अजब हर्षनां पुर व्रषायां
दिव्य दिपकनां तेज छवायां
अम हैयाना हार जयंति उजवीए–४
किंकर मनमां एक मनाया
दीनबंधु भगवान कहाया
नैया तारणहार जयंति उजवीए–५

गीत बीजुं

राग—व्हाली लागे छे मने योगीनी झुंपडी

आजे सुवर्ण दीन हरषे उजवीए
रजनीनां स्पप्न वित्यां हो दवलो आनंद झरे छे–१

जंगलनो योगी ए मस्तीमां झूलतो
सोहमना ध्यानमां रे हो दवलो आनंद झरे छे–२

आजे छे जन्म दीन माघ सुदी पंचमी
उषानां नीर व्रषे हो दवलो आनंद झरे छे–३

अलबेला नाद अने झांझर झणकारथी
रूमझूम रणकार थता हो दवलो आनंद झरे छे–४

आवो आवोने बाळ भक्तिमां नाचीये
शांतिना तानमां रे हो दवलो आनंद झरे छे–५

मस्तीमां झूलीए मस्तीमां झूलीए
मस्तीमां झूलीए रे हो दवलो आनंद झरे छे–६

मनडुं हरखावीए अंतरमां ध्यावीए
चरणोमां झूकीये रे हो ! दवलो आनंद झरे छे–७

किंकरना प्राण कहे मस्तीनुं हीर ए
भोळा भगवान दीसे हो दवलो आनंद झरे छे–८

गीत त्रीजुं

राग—तुंही तुंही साचो भगवान

जन्मदीन आजे कहाय   बाळ सहु हरषे उजवीए—टेक
आजे सुवर्ण दीन   आजे सुवर्ण दीन
अंतरमां प्रेम उभराय   बाळ सहु हरषे उजवीए—१

प्राणनाथ प्यारा   प्रीतमजी हमारा
शीर एना चरणे झूकाय   बाळ सहु हरषे उजवीए—२

अलबेला नाद अने   उर्मी वसंतनी
रोम रोम हैयां भींजाय   बाळ सहु हरषे उजवीए—३

ज्ञानी गुणीलडो   ध्यानी योगीलडो
प्राणनाथ हैयानो हार   बाळ सहु हरषे उजवीए—४

पंखीडां पान करे   हैडाना भावथी
शांतिनी मोंघी छे माळ   बाळ सहु हरषे उजवीए—५

जातिनो भेद नहि   राय रंक एक छे
प्रेमतणा पुष्पे वधाय   बाळ सहु हरषे उजवीए—६

किंकर बाळ प्रभु   योगीनां पंखीडां
ळीलळी लागे छेपाय   बाळ सहु हरषे उजवीए—७

गीत चोथुं

राग—आवो आवोरे हा! बालुडां वेलेरां आवजो

आजे उजवीए हो! जयंति योगी प्रभोनी
अंतर ओवारीए हो! बालुडां सर्वे उमंगथी—१

शोभा सुंदर दीसे दवली वसंतनी
पुष्पपान फाल्यांरे हो! जयंति योगी प्रभोनी—२

कोयलडी गान करे मीठा सादलडे
मनडामां तानपुरे हो! जयंति योगी प्रभोनी—३

वनमांहे वृक्ष खील्यां वायुनी लहेरीओ
रोम रोम हरखेरे हो! जयंति योगी प्रभोनी—४

मोरनाद करतो त्यां टहुके टहु कारथी
टीहु टीहु टहुके रे हो! जयंति योगी प्रभोनी—५

आहिरनी ज्ञातने उजाळीओ! वीरला
प्रेमनीर रेल्यांरे हो! जयंति योगी प्रभोनी—६

प्रगटयो पुनम चंद्र झळकयो आ विश्वमां
दिव्य दीप दुनियानो हो! जयंति योगी प्रभोनी—७

किंकर बाळ कहे भोळा भगवाननी
आजे उजवीए हो! जयंति योगी प्रभोनी—८

गीत पांचमुं

राग—शार्दूल विक्रडीत छंद

आजे सर्वे एक थइ उजवीए भ्रातु जनो हर्षथी
तन मनना सहु भेदने दूर करी जय जयतणा नादथी
भारतमां ए सूर्य रुप झळक्या ज्ञानी गुरुवर प्रभो
योगीश्वरनु दिव्य नाम सूणतां आनंद उलटे विभो–१

पामे पुन्यथकी गुरुवरतणा संसर्गने मानवी
योगीश्वरए मस्त आत्म ध्यानी माया अकळ जाणवी
जन्मीआहिर ज्ञातने उजाळी वंदनकरो हर्षथी
चरणे शीष झूकावतां जीवनमां शांति थशे स्पर्षथी–२

उपन्या नम्र मणादरे पीताश्री तोळातणा गृहविषे
कुक्षीमात वसुतणी दिपावी अवधूत साचा दीसे
वर्णन करवुं केम ए कठीन छे ज्योति झघी विश्वमां
ज्ञानी ज्ञान थकी गुणो निरखता रहेता निझानंदमां–३

जन्म जयंति गान तान करतां म्हालो महानंदथी
अवसर मळवो फेरफेर दुलहो उजवो निझानंदथी
विश्वमही आदर्शए विभूती घटमां नहि भूलजो
किंकरबाळक हर्षथी विनवतो भक्तिमही झूलजो–४

गीत छठुं

राग—आलममां डंका बजादीया

ए ब्रह्मपतित पावन योगी
घट घटमां नाद बजाता है
ए आत्म अखंडानंद मही
पर्वतने पहाड गजाता है–१

मस्तीनां नीर व्रषेवनमे
दीप ॐ तणो प्रगटे तनमे
ए ध्यान करे निशदीन घटमे
दुनियामे ज्योत झगाता है–२

नयनोमे शांति सुधाझरते
घट मंदिरको पावन करते
जळ भक्ति सरोवरका भरते
आलमकी प्यास छीपाता है–३

दीनबंधुनाथ मुजे प्यारा
भव भयके संकट हरनारा
ए प्राणपति पालनहारा
परमातम रूप बताता है–४

किंकरने शीषझूकाया है
मन मंदिर प्राण मनाया है
नवखंडे नाम गवाया है
नवखंडे नाम गवाया है–५

भक्तिरस काव्यो

" अजाण्या मार्गे जतां भोमीयानी जरूर पडे छे तेम मुक्तिना पंथे निसरतां आत्मार्थी भोमीयानी जरूर पडे छे.

काव्य १ लुं

राग—कल्याण

जय जय जय भगवान निराळा
तुम बीन कोइ न तारणहारा—जय १

विश्वंभर प्रभु एक कहाता
सकळ जगतमां नित्य भजाता
दीनबंधु भगवान हमारा—जय २

संकट टाळो पार उतारो
भव भयनां प्रभु दुःख संहारो
सकळ जगतना पालन हारा—जय ३

किंकर बाळक शिर नमावे
तुंही तुंहीना सहु जन गुण गावे
धर्म धुरंधर जग प्रतिपाळा—जय ४

काव्य २ जुं

राग—नाटकनो

भगवान मोरी नैया भव पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा लेना—भग १

जंजट है कर्म केरी उसमें भूलुं कदापि
तो नाथ महेर करके दिलसे न भूला देना—भग २

मद राग द्वेष चोरो कहीं भी फसादे हमको
वहां पर भी आप आके तुम बाळ बचा लेना—भग ३

तुम नाथ में हुं किंकर तुम स्वामी में हुं चाकर
यह बात सत्य होतो सत करके बता देना—भग ४

अगणित दोष हमरे फीर भी है आश तेरी
सब भूल माफ करके अपना ही बना लेना—भग ५

भव सिंधु में भटकते नरदेह उंच्च पाया
अब नाथ तुं मीला तो भक्ति में झूला लेना—भग ६

आश्रित दास तेरे मुखसे पूकार करते
शांति सुधा तृषा के चरणो में बुला लेना—भग ७

काव्य ३ जुं

कवाली

तेरे मंदिर में कैसे में आवुं प्रभु
प्यास दर्शन की कैसे छिपावुं प्रभु–तेरे १

बहोत वर्षों के स्वप्ने विताये प्रभु
तो भी रोशन मुजेना दिखाया प्रभु–तेरे २

मेरी अरजी किसीसे सूनावुं प्रभु
तेरे चरणों का बाळक बना हुं प्रभु–तेरे ३

मेरे भींतर में अग्नि जली है प्रभु
उसी अग्निको कैसे बुजावुं प्रभु–तेरे ४

प्राण प्यारा तुम्हीको स्वीकारुं प्रभु
मेरे कर्मो की कथनी गुजारुं प्रभु–तेरे ५

नित्य धूनी में तेरी धखावुं प्रभु
मेरे नयनोमें आंसु छुपावुं प्रभु–तेरे ६

दया करदे ए किंकर तुमारे प्रभु
तेरे मंदिरमें हमको बुलाले प्रभु–तेरे ७

काव्य ४ थुं

राग देश

अब नाथ बुलाले बाळ तुमारे द्वारपे खडे—टेक

क्या मरजी है नाथ तुमारी तुंही तुंही मन लगन अपारी
कयुं तलसाते बाळ तुमारे द्वारपे खडे —अब १

नाथ तुम्ही जानत सबघटकी ज्योत तुमारी झगमग झगती
ज्योत बतादे बाळ तुमारे द्वारपे खडे —अब २

आप कनैया एक हमारे तुमबीननैया काइ न तारे
पार लगादे बाळ तुमारे द्वारपे खडे —अब ३

केम रीझावुं नाथ हमारा आप मुजे नयनोका तारा
दर्श दीखादे बाळ तुमारे द्वारपे खडे —अब ४

भिक्षरुपे जगमे भजवाते किंकर बाळ तुंही गुणगाते
शीष झूकाते बाळ तुमारे द्वारपे खडे —अब ५

काव्य ५ मुं

राग—मेघ मल्हार

नाथ तुंही मन पळ पळ आवे
तुंही तुंही के सब जन गुण गावे–नाथ १

मान मपंची लोभ धूतारा
मोह भींतर से कोन हठावे–नाथ २

घाट खडक ने खीण अपारी
मद चोरनकु कोन भगावे–नाथ ३

मात पिता सुत स्नेह सबंधी
माया सबको भान भूलावे–नाथ ४

घट मंदिर को साफ बनाके
शांति सुधाकी धार वृषावे–नाथ ५

निजकी गतको कोन पिछाणे
वो नर तुंही के दर्शन पावे–नाथ ६

किंकर झूलते नाथ चरणमें
शांति दीपककी ज्योत झगावे–नाथ ७

काव्य ६ ठुं

राग—नाटकनो

टेर सूनो भगतनकी भगवंत-टेर सूनो

ढूंड चूका में सब संसारा आपविना नहिं कोइ हमारा
सबके पालनहारा भगवंत टेर सूनो—टेर १

आप सकळ जगके उपकारी प्रीतकीनी में नाथ तुमारी
भव भय भंजनहारी भगवंत टेर सूनो—टेर २

शांति सुधाकी वरसे धारा पतित पावन नाम तुमारा
आपही एक हमारा भगवंत टेर सूनो—टेर ३

आश मुजे मन एक तुमारी हम जैसे तुम भक्त अपारी
आश पुरनकर मारी भगवंत टेर सूनो—टेर ४

भिक्षुक टेर सूनो प्रतिपाळा दीनबंधु भगवान दयाळा
किंकरदास तुमारा भगवंत टेर सूनो—टेर ५

काव्य ७ मुं

राग—टेर सूनो भगतनकी

कैसे मिलुं भगवंत तुम्हीको कैसे मिलुं।

अनाथ हुं मे बाळ तुमारा आप सनाथ जगतहितकारा
एक हमे आधारा भगवंत कैसे मिलूं—कैसे १

राय रंक सबवाळ तुमारे नाम तुम्हीका सर्व पूकारे
तुम बीन कोई नतारे भगवंत कैसे मिलूं—कैसे २

प्यास हमारी कोन छिपावे शांति सुधा घटमें बरसावे
बाळ तुंही गुणगावे भगवंत कैसे मिलूं—कैसे ३

जो चाहुं मे आप सहारा बहोत सतावे कर्म हमारा
आपही तारणहारा भगवंत कैसे मिलूं—कैसे ४

किंकर रडतो आंसु धारे नाथ चरणमें अर्जगुजारे
आश मुजे मन भारे भगवंत कैसे मिलूं—कैसे ५

काव्य ८

कवाली

जहां पे देखो हमारो कनैयो बसे
कनैयो बसे ए कनैयो बसे--जहां १

पर्वतो में हमारो कनैयो बसे
भेखडो में हमारो कनैयो बसे--जहां २

जंगलो में बसे झुंपडी में बसे
भक्त जनमें हमारो कनैयो बसे--जहां ३

पुष्पवाडी खीले व्हां कनैयो बसे
ब्रह्म में भी हमारो कनैयो बसे--जहां ४

मंदिरो में हमारो कनैयो बसे
मुक्ति में भी हमारो कनैयो बसे--जहां ५

घट-घटमें हमारो कनैयो बसे
ए हमारा मही हम नहि व्हां दीसे—जहां ६

दास किंकर के घटमें कनैयो बसे
आत्मशुद्धि कीया बाद दर्शन थशे—जहां ७

काव्य ९

राग—कवाली

आवो आवो कनैया हमे मंदिरे
प्रेमदिपक जलाया हमे मंदिरे—आवो १

तान अवधि मचाया हमे मंदिरे
तेरी ज्योति के रोशन हमे मंदिरे—आवो २

पुष्पवाडी खीलाइ हमे मंदिरे
वास करने पधारो हमे मंदिरे—आवो ३

भक्तिसागर वृषाया हमे मंदिरे
स्नान करने पधारो हमे मंदिरे—आवो ४

शांति के नीर झरते हमे मंदिरे
पान करने पधारो हमे मंदिरे—आवो ५

दास किंकर बुलावे हमे मंदिरे
आवो आवो कनैया हमे मंदिरे—आवो ६

काव्य १०

राग—खमाज ताल दादरा

प्रेम दिपक भींतर थयो
रजनी स्वप्न भूली गयो
भक्तिनो प्रकाश भयो—मन प्रभु पूकारे १
आज थयो दिव्य रंग
कोइ कहे भक्ति जंग
भींतरमां अति उमंग—मन प्रभु पूकारे २
प्राणपति प्रेम करे
हृदय मारुं तान भरे
मस्ति तणां नीर झरे—मन प्रभु पूकारे ३
आज आ बधी नवाइ
ज्योत भींतरमां छवाइ
नित्य भजन गाइ गाइ—मन प्रभु पूकारे ४
मृत्यु पंथमां मूकाय
तोय भक्ति ना तजाय
मन तुंही तुंही भजाय—मन प्रभु पूकारे ५
दास बाळनो ए टेक
भक्तिमां चढावो छेक
मन विषे तुं एक एक—मन प्रभु पूकारे ६

काव्य ११

राग--उपरनो

आवो आवो सर्व साथ
भेटवा अनाथ नाथ
झालशे तमारो हाथ--भक्ति नाच खेलो १

प्रीत छे अनादि काळ
कर्मनी गति विशाळ
नित्य भींतरने उजाळ--भक्ति नाच खेलो २

हाम कदि नव तजाय
नाव हिंमते धपाय
नित्य प्रभु गुण गाय--भक्ति नाच खेलो ३

पुन्यथी मळयो पतंग
भक्ति दोर छे अभंग
आभमां विविध रंग--भक्ति नाच खेलो ४

शांतिनां छ्टावो नीर
आत्ममां अखंड हीर
किंकरे लगायुं तीर--भक्ति नाच खेलो ५

काव्य १२

राग—कवाली

आत्म दर्शन कराने वाले प्रभु हमारे प्रभु हमारे
ज्योत जगमे जगाने वाले प्रभु हमारे प्रभु हमारे-१
जग्त के माता पिता परमेश्वरा प्रियतम प्रभो
नैया हमरी बचाने वाले प्रभु हमारे प्रभु हमारे-२
आशके पंथे हमे नट खेलते संसारमें
तो भी हमको छुडाने वाले प्रभु हमारे प्रभु हमारे-३
वहोत वर्षो तक ढूंडे तोय भी शरणा भया
रोग मनके मिटाने वाले प्रभु हमारे प्रभु हमारे-४
आप के किंकर भिखारी नित्य अर्ज गुजारते
परमपंथे चढाने वाले प्रभु हमारे प्रभु हमारे-५

काव्य १३

राग—छोटासा वलमा मेरे आंगणे मे गिल्ली खेले.

नैया तुं तार कनैया एक सकळ जगके आधारा
दुःखडां तुं वार कनैया एक सकळ जगके आधारा-१

ज्योत झगमगती तुमरी विश्वमहीं हो जयजयकारा
घटघटमें रोशन झळके प्राण प्रभु मन मंदिर प्यारा-२

भवसिंधु ढूंड चूका अब आप मिला मुजको आधारा
अबक्यूं तलसाते मुजको बाळ बनादे नाथ तुमारा-३

निशदिन मैं नाम पूकारुं तुंही तुंही मन एक हमारा
फिरभी नहि ध्यान लगाते आप मुजेको एक सहारा–४

भिक्षुक मैं बाळ तुमारा आप दयाळु दिन दातारा
अरजी अंतर में धारो नाथ तुमी हो पालनहारा–५

मायाने बहोत भमाया पुन्य प्रतापे दर्शन पाया
किंकरको पार लगादे तुंही तुंही मन एक मनाया–६

काव्य १४

राग—पूझारी मोरे मंदिरमें आवो

कनैया शांति सुधा वरसादे
शांति दिपकका तेज अपारी रुप मुजे बतला दे
चेतन हमरे देखन आये ज्योति में ज्योत मिलादे–कनैया १

गान मुजे मन ध्यान मुजे मन तुंही तुंही मन प्यारे
तुम बीन जगमें कोइ नहि मेरा तेरा ही बाळ बनादे–कनैया २

तुंही हमेरा हम हे तेरा सत करके बतलादे
पळ पळ हम तुमही गुण गावे प्रेम में प्रेम मिलादे–कनैया–३

बहोत दिनोसे हंस पूकारे नाथका साथ हमारे
संग किया तो पार लगादे भक्तिमें बाळ झूलादे–कनैया ४

पतित पावन पार लगावन किंकर पार लगा दे
नैया हमरी तार कनैया अंतर प्यास छिपादे–कनैया–५

काव्य १५

राग खमाज ताल दादरा

आज मारुं जीवन नाव भक्तिना उलासे
सूरतान गान ध्यान हृदयना प्रकाषे-१

मन कहे हुं भक्ति करुं तान भीतरमांय भरुं
समज समज भिन्न वात विविध कर्म वासे-२

भींतर मेल साफ थाय न्यायनीती नव भूलाय
जनम जनम सुख थाय जीवन रहे उलासे-३

भक्तिनो विशाळ पंथ निरखशो विविध रंग
हृदयमां अति उमंग जीवन ज्योत थाशे.-४

ब्रह्मनाद भींतरमांय दिव्य ज्योत झगमगाय
दास नित्य गुणगाय हंस रहे प्रकाषे-५

काव्य १६

राग--उपरनो

आज थयो छे उमंग भक्तिनो जमायो रंग
आभमां उडे पतंग पवनना हिंचोळे-१

भक्ति दोर छे अभंग शुद्ध करो सर्व अंग
हिंम्मते मचावो जंग हृदय राम बोले-२

ब्रह्ममां पतंग गयो गगनमां अवाज भयो
आत्ममां अखंडपणे भक्ति नाव डोले-३

कोन ए उडावनार ब्रह्म ने जगावनार
दासने रीझावनार शांति द्वार खोले-४

काव्य १७

राग—उपरनो

आवो आवो प्राणनाथ केम हुं मनावुं
भक्ति भर्या भाव थाळ हर्षथी चढावुं-आवो १

आप तो अनाथ नाथ विश्वना दयाळु
रंक उपर रहेम करो शरण छे तुमारुं-आवो २

अखिल जगत तारनार नाम छे तमारुं
ज्यां निहाळु त्यां तुमारी ज्योतनु उजाळुं-आवो ३

कर्म दुःख छे अपार मन रडे अमारुं
तोय प्राणनाथ एक शरण छे तमारुं-आवो ४

आंगणे खडो पूकारुं नाम हुं तमारुं
दास कहे सिंधुमां डूब्याने तारनारुं-आवो ५

काव्य १८

राग—मोहे लागी लटक प्रभु चरणनकी

मोहे लागी लगन प्रभु दर्शनकी
प्रीत अनादि काळसे तुमरी
निंद गइ मन मंदिरकी-मोहे-१

भक्ति सरोवर भावथी भरीयुं
प्यास छीपावो तनमनकी-मोहे-२

एक कनैयो नाथ हमारो
माळ जपो पळपळ उनकी-मोहे-३

शांति सुधाकी झगमग ज्योति
संग करो प्यारे संतनकी-मोहे-४

किंकर मनगुरु गीरधर शांति
धून लगावो कीर्तनका-मोहे-५

काव्य १९

राग—तेडु थयु कारतारनु

शाने रडे छे तुं हवे म्हारु थवानु नहि कदी
भावी लख्यु ते थाय छे मिथ्या थवानु नहि कदी—ए टेक

म्हारा अने मारा मही आखुं जगत रोया करे
पक्षी तणो माळो दीसे म्हारु थवानुं नहि कदी—१

पत्नी कहे भरथारने प्रियतम तमे छो माहरा
मारा बधा रोता रह्या म्हारु थवानु नहि कदी—२

जुठां जगत पुष्पो बधां खील्यां तुरत करमाय छे
आखर फना थइ जाय छे म्हारु थवानु नहि कदी—३

राजा वसे छे महेलमां झोला हिंचोळे झूलतो
अन्ते जतो ए एकलो म्हारु थवानु नहि कदी—४

थेली भरो परमार्थनी लक्ष्मी जीवननी एज छे
किंकर कहे एना विना भमशो भूलां भवनी मही—५

काव्य २०

राग—गरबो

हुंतो अंतरना हर्षथी हुलावुं रे नाथ मने कयारे मळे-ए टेक

साखी

भटकयो भव नगरी महीं फर्यो अनंतिवार
तोय प्रभुजी ना मळ्या हैया केरा हार

माळ भक्तिना पुष्पनी गुंथावुं रे नाथ मने कयारे मळे-१

साखी

नाथ तमोने भेटवा अति करु कल्पांत
एक वखत आवी मळो मनडुं करजो शांत

हुं तो रजनीमां स्वप्नने वितावुं रे नाथ मने कयारे मळे-२

साखी

शा माटे अळगा करो तुज चरणोना बाळ
प्राणनाथ परमेश्वरा साचा परम दयाळ

प्रेम आंसुनी धार हुं वर्षावुं रे नाथ मने कयारे मळे-३

साखी

लाज अमारी राखजो तुंही तुंही मन एक
मृत्यु समय नत्र भूलीए एज अमारी टेक
हुं तो यौवनने आशमां वितावुं रेनाथ मने कयारे मळे–४

साखी

मोंघी मारी मागणी मोंघी मारी आश
किंकर अर्ज गुजारतो पुर्ण करो मुज प्यास
हुंतो चरणोमां शीषने झूकावुं रे नाथ मने कयारे मळे–५

काव्य २१

गरा–

अजब रंग दुनियाना निरखो पंथ जगतना न्यारा
एक निरंजन देव हमारा सकळ जगत उजीयाळा ...१
कोइ भजे छे राम रामने गुण गावे गोपाळा
एक कनैयो सकळ जगतमां प्रभु प्रभु मन प्यारा....२
ब्रह्म जगावे कोण जगतमां निर्मळ जळनी धारा
अलख मचावे अवधूत योगी ज्योत जीवन जयकारा....३
कोइ लीलुडो कोइ पीळुडो लाल गुलाबी साडा
सती जीवन मन एक कनैयो प्राण पति मन प्यारा....४
हुं पण भटक्यो भान भूलीने मन मंदिर झबकारा
तोपण पुन्य प्रभावे जाग्यो मान्या नाथ निराळा....५

प्रभु प्रभुनो पंथ पकडतां करजो मन अविकारा
किंकर रडतो आंसु धारे एक जीवन आधारा....६

काव्य २२

राग—प्राण प्यारा प्रीतमजी

योगी डुंगरडे नाच करे मस्तीनां नीर भरे
सोहमना ध्यान मही झूलतो—ए टेक.
दिव्य ज्योतिनु अंजन करावे सारी दुनियामां तेज ए झघावे
क्षमा शांतिनां नीर उभरावे प्रीतम प्रभु
सोहमना ध्यान मही झूलतो—योगी १
ह ड भेखडमां धून ए धखावे कर्म अग्नीना तापने बुझावे
पुन्य शाळीने ज्योत ए बतावे प्रीतम प्रभु
सोहमना ध्यान मही झूलतो—योगी २
जन्म मृत्युना रोग ए हठावे मोह मायाने मूळथी भगावे
आत्म मस्तीना तानथी रीझावे प्रीतम प्रभु
सोहमना ध्यान मही झूलतो—योगी ३
कोण क्यांथी ए शोधमां झूकाया परम ज्ञानीने ध्यानी कहाया
प्राणवल्लभना नित्य गुण गाया प्रीतम प्रभु
सोहमना ध्यान मही झूलतो—योगी ४
माळ मुक्तिनी मोंघी मनाइ एनी कीर्ती अमर कहेवाइ
दास किंकरमां ज्योत रहे झघाइ प्रीतम प्रभु
सोहमना ध्यान मही झूलतो—योगी ५

काव्य २३

राग—तुंही तुंही साचा भगवान

प्राणनाथ हैयाना हार बाळ अमे मस्तीमां झुलीये
मस्तीमां झुलीये मस्तीमां झुलीये
मस्तीनी मोंघी छे माळ बाळ अमे मस्तीमां झुलीये–१
प्यारा प्रीतमजी व्हाला वालमजी
झांझरना करीये झणकार बाळ अमे मस्तीमां झुलीये–२
मस्तीना रंग वीरा अलबेला भासता
गीतडांना करीये गुंजार बाळ अमे मस्तीमां झुलीये–३
प्रेम नीर रेल्यां छे भक्तिना भावनां
शांतीना बांध्या छे तार बाळ अमे मस्तीमां झुलीये–४
घुंघरनो घोर पडे दांडीना ठुमके
दांडीथी बाजे रणकार बाळ अमे मस्तीमां झुलीये–५
भव भयना बंध अमे भक्तिथी तोडशुं
शांतिनी ज्योति अपार बाळ अमे मस्तीमां झुलीये–६
पुन्यवंत आवे आनंद उलटावे
भक्तिना मोंघा छे थाळ बाळ अमे मस्तीमां झुलीये–७
आवो अवसर वीरा पुन्य थकी पामीया
शांतिनो साचो आधार बाळ अमे मस्तीमां झुलीये–८
किंकरदास कहे अंतरथी नाचीये
योगीराज हैयाना हार बाळ अमे मस्तीमां झुलीये–९

काव्य २४

राग—गुणवंती गुजरात

चेतन प्रेम दिपक लइ चालो भक्ति जळ भरवा.
रातलडीनां स्वप्न वितावो भवसिंधु तरवा—ए टेक०

जवानु अणधार्या पंथे भींतरथी चालो उत्कंठे
पीछ कदी नहि करीये आपण भक्ति जळ भरवा—चेतन १

घटा घनघोर इहां भासे दिपक छे प्रेम तणो साथे
कर्म तणां दुःख दूर करवाने जइये जळ भरवा—चेतन २

हवे धीरज करवी खोटी जीवनमां आश घणी मोटी
आश सफळ करवाने काजे जइये जळ भरवा—चेत्तन ३

जीवनजी हर्ष थकी जाशो मूरख मन पाछळ पस्ताशो
आवो अवसर फेर मळे नहि जइये जळ भरवा—चेतन ४

प्रभुनो पंथ दीसे न्यारो भर्यो छे पुन्य तणो क्यारो
किंकर विनवे मूरख मनने भवसिंधु तरवा—चेतन ५

काव्य २५

राग—भेरवी

अर्पण करेजो जीवनने ता बाळ तुं एनो बने
एना मही तुं जो वसे तो ए तने एनो गणे—१

अर्पण तणी वातो करे अर्पण कदापि थायना
ए पंथ छे न्यारो कदी भक्ति विना देखायना—२

तुं हस्त जोडीने नमे तेथी कदी रीझायना
दर्शन करे तुं नयनथी पण ए तने देखायना—३

परमां भमे तेथी कदी म्हारुं तने समजायना
पूजन करे चंदन घसी पण चित्त निर्मळ थायना—४

मुखथी करे तुं प्रार्थना उत्तर छतां समजायना
स्नानो करे गंगा विषे पण मेल कदीये जायना—५

माळा तणा मणका फरे दर्शन कदापि थायना
म्हारुं तने समजाय तो ए दूर कदीये जायना—६

म्हारुं अने मारुं कदापि मन विषे समजायना
समज्या पछी ए मानवी माया थकी अभडायना—७

ज्योति जगे जगदीशनी भक्ति कदी छोडायना
किंकर कहे मन मंदिरे एना विना देखायना—८

काव्य २६

राग—भैरवी

गुरुवर तणी छाया विना भवसिंधु पार पमायना
नावी विना सागर तणो कांठो कदी निरखायना—१

भक्ति विना मुक्ति मही मानव कदापि जायना
संसार नाम असार छे ए ज्ञान वीण समजायना—२

हुन्नर करे हिंमत थकी पण भाग्य विण कमायना
भावी लख्युं जे होय ते मिथ्या कदापि थायना—३

जापो भले मुखथी जपे अंतर कदी धोवायना
घट मेल साफ कर्या विना ज्योति जीवनमां थायना—४

जग रागने छोडया विना त्यागी कदी कहेवायना
मद मोहने माया तज्या विण संत नाम कहायना—५

जळपान विण वाडी मही पुष्पो कदापि थायना
सत्संग विण दुर्संगनी एबो कदापि जायना—६

काव्यो रची कविओ बने पण भान निजमां थायना
किंकर कहे निजनामही उतर्या विना समजायना—७

काव्य २७

हरिगीत छंद.

पतित पावन पुनित धाम मही प्रभु म्हाल्या करो
आ रंक रखडे विश्वमां एनु कथन कंइ सांभळो
मनथी अमे मान्युं प्रभुश्री हुं थकी न्यारा तमे
तोपण तमो घटमां वसो बाळक प्रभु त्हारा अमे—१

जगदीश जगजीवन दयाळु नाम आप तणु कह्युं
उद्धार कर्ता विश्वना शरणु अमे त्हारु भयुं
त्हारा अमे त्हारा अमे न्यारा कदापि नव थशुं
त्हारा अरेरे नामथी ज्योति जीवन झळकावशुं–२
तुज साथ प्रीत करी अमे रस्तो बाजो क्यांथी सूजे
तुज हामथी मारा जीवननु नाव भक्तिमां झूझे
बुरा अगर सारा हशु तोपण अमे त्हारा थशु
म्हारा अमे तुजने गण्या न्यारा कदापि नव थशुं–३
परनी नथी परवा अमोने तुं अमारो एक छे
तारे अगर मारे छतां तुं एक साचो टेक छे
जग्त साथे शुं अमारे जग्तथी न्यारा थवा
किंकर कहे भक्ति विना ए मन विषे समजायना–४

काव्य २८

प्रभातीयु

उठ उठ ओ जाग मुसाफीर
प्रभु प्रभु समरी ले
गाफील नहि रहेतो तुं कदीये:
निशदीन स्मरण करी ले–१
मायामां तुं मोज उडावे
मस्त बनीने फरतो
ए मस्ती कंइ काम न आवे
भक्ति भजन करी ले–२

हाट हवेली गोख जरुखा
खाट मही तुं पोढे
क्षणमां ए सहु नाश थवानु
मृत्यु हरण करी ले-३

गयो अवसर फरी नहि आवे
संतजनो ए कहेता
समय अमोलुं धन समजीने
भक्ति भजन करी ले-४

आतम लक्ष्मी मोंघी थेली
पुन्य विना नहि पावे
आतम लक्ष्मी भरवा माटे
प्रभु प्रभु समरी ले-५

रेन गइ अब क्युं नहि जागो
रजनी स्वप्न वितायां
किंकर विनवे निज आतमने
म्हारुं तुं समजी ले-६

काव्य २९

प्रभातीयु

रेन गइ तुं जाग मुसाफीर
जगदीश नाम जपी ले-ए टेक
वर्षो निंद मही त्हें काढयां
त्हारु नहि त्हें जाण्युं
आतम लक्ष्मी उंघमां खोइ
अब तुं निंद तजी ले-१
जनम मरणनी खाइ मही त्हें
विध विध रुप धरायां
त्हारु रुप नहि त्हें जोयुं
घटमां ख्याल करी ले-२
चोराशी योनिमां भटक्यो
मायाना मुझरामां
अब मायानो संग मूकीने
प्रभु प्रभु समरी ले-३
मारु करवा खूब मथ्यो पण
त्हारु नहि त्हें जाण्युं
पर माटे त्हें पीडा होरी
आतम हीत समजी ले-४
चेत चेत शुं कहेवुं तुजने
चेतन कंइक विचारो
किंकर कहे आ मानव सपनु
जगदीश जाप जपी ले-५

काव्य ३०

प्रभातीयु-झूलणा छंद

जागतुं जागतुं जाग मन निंदथी
नित्य भगवंतनु नाम भजले
एह विण कोइ नहि जगतमां ताहरु
भक्ति जळनु सदा पान करले-१

राय महाराय चक्री बधा चालीया
कंइक नयनोथकी त्हें निहाळया
जगत माया जुठी सर्व रहेशे अहीं
नित्य भगवंतनु नाम भजले-२

पुत्र नारी अने स्वजन परिवार सहु
कर्मयोगे बन्युं आज त्हारु
माह माटे रडे सर्व तुज नामने
नित्य भगवंतनु नाम भजले-३

कयां थकी आवीयो कयां जवानो हवे
एह तुं शोध जल्दी करी ले
निंदमां वर्षनां वर्ष वीती गयां
नित्य भगवंतनु नाम भजले-४

नित्य प्रभुने भजो पुन्य कारज सजो
गांठडी आत्मधननी भरी ले
कहे किंकर प्रभो शांति योगीशनो
नित्य भगवंतनु नाम भजले-५

काव्य ३१

प्रभातीयु

चेतन ब्रह्म स्वरुप जोवाने खंते महेनत करतोरे
सुरता साथे संग करीने मस्ति जळ ए भरतो रे–१
हाड मांसने रुधीर मळीने काया देवळ मढीयुं रे
पंच तत्त्वथी महेल चणायो झूठ झरुखे जडीयुं रे–२
जग साथे शुं प्रीत हमारे हंस अमारा कहेता रे
माया मोह ने मान लूंटारा तो पण संगे रहेता रे–३
भक्ति भडाका प्रेमनी तोपे देह लूंटारा हणशुं रे
सत्य सरिता घटमां वहेती पावन एमां थइशुं रे–४
जग मायाथी न्यारा बनवा चेतन तान मचावो रे
किंकर कहे घट निर्मळ करवा भक्ति जळ उभरावो रे–५

काव्य ३२

राग–आज सूरीश्वरजी भेटीने आनंद थाय

आज मारा अंतरमां आनंद आनंद थाय—
पुन्य उदय थयो निंद्राथी जागीयो
हैडामां हर्ष उभराय—आज १
मायामां भटकयो हुं भक्तिथी चेतीयो
तुंही तुंही नामने भजाय—आज २
पाप नाश थाशे तो मुक्तिने पामशो
भक्तिनां नीर जो त्रषाय—आज ३
केम करी प्रीयतमनोपंथ हुं निहाळुं
पियु पियु अंतरमां थाय—आज ४

प्रेमधार वरसे जो भक्तिना नीरनी
आग मारा दीलनी बुझाय—आज ५
माळ प्रभु गुंथी में हैयाना तारथी
दास कदी छुटो ना थाय—आज ६

काव्य ३२

गझल

फकीरो झुंपडी मांहे जीवन नैयां झुलावे छे
दिवानो कोक दुनियामां अमर पंथे सिधावे छे-१
फकीरो आत्ममस्तीमां जगत परवा नहि राखे
सदा जगदीशना झोले गजब मस्ती मचावे छे—२
अखंडानंदनां झरणां व्रषावे आत्ममंदिरमां
प्रभुताना दिपक वाटे अमर ज्योति जगावे छे—३
निरंतर स्नान भक्तिमां हृदयना मेलने धोता
बनी निर्मळ पछी पोते प्रभुनो पंथ पावे छे—४
तजी वैभव अने वाडी जगत माया जुठी माने
पछी प्रियतम तणा पंथे धूनी सोहम धखावे छे—५
सुखो संसारनां त्यागी निशानी मुक्तिनी लेवा
पछी मस्तान मस्ताना जीवन आगे धपावे छे—६
अजब मस्ती जीवन केरी प्रभुता केम समजाये
लघुताना पढे पाठो क्षमा अंतर व्रषावे छे—७
कहे योगीशनो किंकर सदा मोटा बने छोटा
कदी छलकाय नहि पोते अमर पंथे सिधावे छे—८

काव्य ३४

गजल

चडयो छुं पुष्प लेवाने छतां ए हाथ ना आवे
निसरीयो शोधमां आजे अरे ए पुष्पने माटे-१

वगीचो स्वर्गनो मोटो अमर छे नाम वृक्षोनु
वितावु स्वप्नमां रजनी अरे ए पुष्पने माटे-२

कहातुं नाम अविनाशी मणीमय छांयडी एनी
जीवन शांति थवा फरतो अरे ए पुष्पने माटे-३

सुगंधी दिव्य देखाती अनुपम वास छे एनी
रखडतो वास लेवाने अरे ए पुष्पने माटे-४

नथी ए विश्वमां मळतुं अकळ वाडी कहाती ए
पशु सम आज हुं भटकुं अरे ए पुष्पने माटे-५

भम्यो भव चकनी मांहे छतां आशा नथी पुरी
जतो हुं भक्तिना पंथे अरे ए पुष्पने माटे-६

कहे योगीशनो किंकर मळे तो वासना म्हेंकी
अखंडानंद उलटावुं अविचळ सुखने माटे-७

काव्य ३५

गजल

तफडतुं आज आ पक्षी जीवननो पंथ चढवाने
भूल्याने ज्ञान बतलावे प्रभो ज्ञानी गुरुवरजी–१

नतुं जाण्युं जीवनमांहे तथापि आज में जोयुं
थवानु ना थवानु छे प्रभो ज्ञानी गुरुवरजी–२

बन्युं शाने अरे आवुं कदापि ए नथी जोतो
पीलावे प्रेमनु पीणुं प्रभो ज्ञानी गुरुवजी–३

हजु पुन्ये सूज्युं साचु भूल्या त्यांथी फरी मनमां
जवुं जगनाथना पंथे प्रभो ज्ञानी गुरुवरजी–४

सळगतां काळजां ठारे अरे रे शुद्ध जळ धारे
बुझावे आग भींतरनो प्रभो ज्ञानी गुरुवरजी–५

प्रभुना नामनी पाछळ जीवन मस्ती जगावीशुं
अमारा दोषने टाळे प्रभो ज्ञानी गुरुवरजी–६

अवर साथे अमारे शुं पूजारी सत्यना प्यारा
अविचळ धाममां मूके प्रभो ज्ञानी गुरुवरजी–७

कहे योगीशनो किंकर हजी छे हाथमां बाजी
अमर पंथे मूको अमने प्रभो ज्ञानी गुरुवरजी–८

काव्य ३६

गजल

निहाळ्युं तुं जीवन पक्षी प्रभु पंथे उडी चाल्युं
अमेने ए रह्या जोता उडयुं ए ब्रह्मनी वाटे....१

नयनना एक पलकारे उघडतां में नजर फेंकी
पछीथी कंइ नहि दीठुं उडयुं ए ब्रह्मनी वाटे....२

अरे तुं जो अरे तुं जो वदातीती मुखे वाणी·
परंतु एक क्षण मांहे उडयुं ए ब्रह्मनी वाटे....३

पछीथी सर्व जाणीने हृदयमां खूब पस्ताया
हतुं त्यारे नहि जोयुं उडयुं ए ब्रह्मनी वाटे....४

पूकारो नित्य ए करतुं अजब जादु भर्युं फरतु
छतां त्यारे निहाळ्यु नहि उडयुं ए ब्रह्मनी वाटे....५

हवे आंसु अतिसारो रडो के ना रडो तो शुं
हतुं त्यारे विचार्युं नहि उडयुं ए ब्रह्मनी वाटे....६

गयुं ए नहि फरी आवे अविचळ स्थानमां वासो
जगत साथे पछीथी शुं उडयुं ए ब्रह्मनी वाटे....७

कहे योगीशनो किंकर अमोली प्रेमनी धारा
छतां पण पान ना कीधुं उडयुं ए ब्रह्मनी वाटे....८

काव्य ३७

गजल

कनैयो एक दुनियानो दुःखीनां आंसुडां लोतो
नथी ए सत्य समजातुं अरे एने त्हमारे शुं....१

पराया दुःखने माटे कदी परवा नहि राखे
जगतथी दूर ए वसतो अरे एने त्हमारे शुं....२

नथी मूर्ति मही रहेतो नथी ए मंदिरे रहेतो
अविचळ धाम ए कहेतो अरे एने त्हमारे शुं....३

त्हमाराथी सदा न्यारो छतां ए छे त्हमारामां
वीराओ पण नहि समजे अरे एने त्हमारे शुं....४

भूलीने भान भटकावो बनो माया मही पागल
विचारो नहि तमो पोते अरे एने त्हमारे शुं....५

त्हमारुं जो तमे समजो प्रभुना पंथ जावाने
नहि समजाय पोतानु अरे एने त्हमारे शुं....६

समजवा कंइ करे मस्ती भींतरमां तान उभरावे
छतां ज्योति नहि जागे अरे एने त्हमारे शुं....७

कहे योगीशनो किंकर झूकावो भक्तिनी वाटे
हृदयना मेल धोवाशे पछीथी पंथ पकडाशे....८

काव्य ३८

गजल

विखूटयो केम हुं आजे प्रभु भक्ति छतां आशुं
भर्युं छे सर्व त्हारामां अवरमां केम तुं भटके....१

अखंडानंद त्हारामां भर्यो छे तुं छतां आजे
विसारी भान पोतानु अवरमां केम तुं भटके....२

भम्यो भमरो बनी पुष्पे सुगंधी सर्व त्हारामां
भींतरमां नित्य महमहती अवरमां केम तुं भटके....३

समज होवा छतां भूल्यो फस्यो माया तणा फंदे
निरखतो नहि छतां आजे अवरमां केम तुं भटके....४

जीवन निश्चय कीधा विना मुखेथी जाप तुं जपतो
वचन त्हारां भूली आजे अवरमां केम तुं भटके....५

अनंता वर्षना स्वप्ने मळ्युं आजे निरखवानु
छतां त्हारु विसारीने अवरमां केम तुं भटके....६

जगतनी छे जुठी बाजी तजी दे खेल सहु खोटा
जीवन मंदिरने छोडी अवरमां केम तुं भटके....७

मणीमय आत्म मंदिरमां उंडा उतरी जरा जो जो
कहे योगीशनो किंकर अवरमां केम तुं भटके....८

काव्य ३९

गझल

फकिरी वास जोवाने तलसतु मन अरे मारुं
छतां भासे नहि मुजने अजब मस्ती जीवन केरी....१

लगन जो मन विषे लागे पछीथी पाप सहु भागे
चडे छे वीर नर आगे अजब मस्ती जीवन केरी....२

चडया ते ब्रह्मना पंथे जीवन ज्योति जगावाना
अलख धूनी मचावाना अजब मस्ती जीवन केरी....३

फकिरो मस्त मस्ताना अलख अंतर मही जागे
कदी परवा नहि राखे अजब मस्ती जीवन केरी....४

ढुंडेथी ना नजर आवे पुरवना पुन्यथी मळता
जगतथी रहे सदा न्यारा अजब मस्ती जीवन केरी....५

निरखतां पण नहि पावे भूलीने कंइक भटकावे
नकल करतां अकल नावे अजब मस्ती जीवन केरी....६

विकट पंथे वसे छे ए अखडानंद उभरातो
भयानक पंथ ए भासे अजब मस्ती जीवन केरी....७

कहे योगीशनो किंकर नथी ज्यां प्राणनी परवा
जता ए पंथ जोवाने अजब मस्ती जीवन केरी....८

काव्य ४०

गजल

रुठयो तुं केम अम उपर नथी एनी खबर पडती
बन्यो तुं बेवफा आजे समज एनी नथी पडती–१
अमारो तुं अमे त्हारा छतां आजे बन्यु शुं आ
तमे ने हुं दीसे न्यारा समज एनी नथी पडती–२
अमे मान्यो तने म्हारो छतां आजे जुदा भासे
बनावे केम नहि त्हारो समज एनी नथी पडती–३
छतां हुं शोधमां आजे कदर त्हारी भूलुं ना ना
तथापि शुं बन्यु आजे समज एनी नथी पडती–४
रुठे दुनिया भले हम पर कदापि तुं नहि रुठे
कदर या बेकदरतानी समज आजे नथी पडती–५
अनादि काळनी प्रीति गुंथाया तार भावीना
व्रषे छे प्रेमनां आंसु समज त्हारी नथी पडती–६
मुझायुं मन हवे मारु नयन चारे दिशा तलसे
प्रभो शुं शुं थवानु छे समज एनी नथी पडती–७
कहे किंकर छतां त्हारो प्रभो योगीश तुं म्हारो
रिसायो केम तुं आजे समज एनी नथी पडती–८

काव्य ४१

गझल

मुझायुं मन अति मारुं हवे हुं नीर क्यां सारु
निरखतो घोर अंधारु अमारु क्यां अमारु क्यां–१

जवाने पंथ हुं जोतो दिपकमां तेज नहि भासे
निसरीयो शोध करवाने अमारु क्यां अमारु क्यां–२

अमारा ने त्हमारामां रडे आजे बधी दुनिया
फस्या सहु मोहनी जाळे अमारु क्यां अमारु क्यां–३

त्हमारामां नथी म्हारु छतां तुं छे अमारामां
खबर पडती नथी एनी अमारु क्यां अमारु क्यां–४

मर्या कंइ शोध करवामां छतां समज्या नहि म्हारुं
अजब चावी दीसे एनी अमारु क्यां अमारु क्यां–५

छतां ए टेक लीधी छे अनादि काळना योगे
निरखवाना अमे निश्चय अमारु क्यां अमारु क्यां–६

पकडशु प्रेमथी दोरी कदापि तार ना तूटे
कहे किंकर निहाळीशुं अमारु क्यां अमारु क्यां–७

काव्य ४२

गजल

मने ए नित्य कहेतो तो त्हमारुं में निहाळ्युं छे
नथी ए सत्य समजातुं अमारे ने त्हमारे शु–१

त्हमारुं जो निहाळ्युं तो अमारुं क्यां तमे जोयुं
बधी ए वात जुठी छे अमारे ने त्हमारे शु–२

तमे क्यां ने अमे क्यांथी अमे ने तुं अजब जादु
नथी त्यां हुं अने कोइ अमारे ने त्हमारे शु–३

अमारा ने त्हमारामां कहाता सर्व संसारी
नथी संसारनी झांखी अमारे ने त्हमारे शु–४

नथी त्हारुं कदी जोयुं छतां मारी करे वातो
वितावी स्वप्नमां रातो अमारे ने त्हमारे शु–५

अमाराथी तमे न्यारा त्हमाराथी अमे न्यारा
छतां तुं केम कहे जोयु अमारे ने त्हमारे शु–६

अमारु जो अमे जोशुं पछी नहि कोइने मळशुं
कहे योगीशनो किंकर अमारे ने त्हमारे शु–७

काव्य ४३

गजल

हवे क्यां शोधवा जावुं अनादि वर्ष वितायां
छतां म्हारु नहि जोयुं दयाकर ओ दयासिंधु–१

अवरने शुं अमे कहीए सदा माया मही रहीये
जीवनना दोष उद्भवीए दयाकर ओ दयासिंधु–२

अरेरे मोहना स्वप्ने गुमाया रात ने दहाडा
जलावी रोममां ज्वाला दयाकर ओ दयासिंधु–३

गुन्हा अगणित कीधा छे दुःखीने दुःख दीधां छे
अपारे जुल्म कीधा छे दयाकर ओ दयासिंधु–४

अमारां कर्म छे भारे कदापि नव चडो व्हारे
उगारे के भले तारे दयाकर ओ दयासिंधु–५

अमारां पाप ना जोशो दुःखीनां आंसुडां लोशो
सळगती आग बुझवशो दयाकर ओ दयासिंधु–६

अमोने एक आधारो कहे किंकर प्रभु त्हारो
कृपाळु नाथ तुं म्हारो दयाकर ओ दयासिंधु–७

काव्य ४४

गजल

भूलीश हुं जग्तनी माया प्रभुजी नहि भूलुं तमने
दया दातार दीन बंधु प्रभुजी नहि भूलुं तमने–१

कदापि महेलमां सूतो रखडतो शहेर के रस्ते
सुखी हउं के दुःखी हउं पण प्रभुजी नहि भूलुं तमने–२

बनुं हुं रंक के राजा कदापि शेठ दुनियानो
अमीरी के फकिरीमां प्रभुजी नहि भूलुं तमने–३

बगीचा बागमां म्हालुं कदापि झुंपडी वासो
अगर हुं पर्णकुटीमां प्रभुजी नहि भूलुं तमने–४

हिंडोळा खाटमां झूलतो कदापि भीख मागुं हुं
फना थइने फरु तो पण प्रभुजी नहि भूलुं तमने–५

दुःखोना डुंगरो तूटे कदी आखु जगत रुठे
परंतु प्राणना भोगे प्रभुजी नहि भूलुं तमने–६

जीवनना धम पछाडामां अगर मृत्यु बिछानामां
मरणना श्वास लेतां पण प्रभुजी नहि भूलुं तमने–७

पुर्या मन मंदिरे व्हाला पछीथी क्यां जवाना छो
दिवानो दासकिंकर कहे प्रभुजी नहि भूलुं तमने–८

काव्य ४५

आशावरी

जगतमां आश अमर कहेवाय

कोइ फरे धननी आशामां कोइ फरे तननी आशामां
कोइ फरे पीयुनी प्यासामां रात दिवस भटकाय-१
कोइ करे तप पत्नी माटे काइ ढुंडे प्रियतमनी वाटे
आश मही सहु जन गुणगाते आशा स्वप्न विताय-२
कोइ झूले वैभवनी व्हेले कोइ झूले मस्तीना महेले
कोइ अभागी कण कण तोले आश छतां नव जाय-३
आशा देवी अमर कहाती आश कदी पुरण नव थाती
तोय घटोघट आश भजाती आश मही अथडाय-४
मस्त जीवनमां मोंघी आशा मुक्तिपुरीनी एक पिपासा
किंकर निरखे जग्त तमाशा विध विध नृत खेलाय-५

काव्य ४६

आशावरी

चेतन अपनी गत कीम जाणु

हंसा तान करे मन मंदिर तुंही तुंही केम पिछाणु
कोन प्रीतमजी मन मंदिरके एह नहि समजाणु-चेतन १
अंधा अंध फीरे संसारे एक पीछे पटकाणु
समज समजमे बोल फरकहे निजनु केम पिछाणु-चेतन २

संत ढूंडा मे सब शहेरोंके वांपण नहि समजाणु
माया मुझवे उनको भारी ए नहि त्याग पिछाणु–चेतन ३

मेरा मेरा मन नहि विसरे सागर नाव डूबाणु
नैया हमरी कोन बचावे तुंही तुंही नाथ पिछाणु–चेतन ४

किंकर कहे ते मूरख मनने तज तुं मोह ढींगाणु
ब्रह्मस्वरुपकी ज्योत अनेरी अपनी गत कीम जाणु–चेतन ५

काव्य ४७

भजन

हंसा तमे रहेजोरे प्रभु प्रभु ध्यानमांजी
मनवा नित्ये ध्यावो प्रभु प्रभु नाम–हंसा १

माटीनी घडेली काया छतां ए अजब छे माया
मारु मारु मानी रहे गुलतान–हंसा २

मारा म्हारामां मरता आतमनु कंइ नहि करता
लोभी जीवडा नित्य करे बूमराण–हंसा ३

प्रभु प्रभु मुखथी जपतो मायाना तापे तपतो
रडतो रडतो चरणे पडे वारंवार–हंसा ४

हजु हाथमां छे बाजी करी ल्यो प्रभुने राजी
किंकर कहे छे योगीश्वनी मने व्हार–हंसा ५

काव्य ४८

राग—धन्यभाग्य हमारां आज पधारो मोंघेरा मेमान

ओ ! नाथ ! कहेला कोल प्रमाणे मुज फळशो क्यारे
प्रभु अंतर्यामी मळीया उलट अवधि उरमां भरीया
रजनी विषे आपेला कोल प्रभु फळशो क्यारे
ओ ! नाथ–१

निरखतो भिन्न स्वरुप त्हारु बतावो समय समय न्यारु
दर्शनमां आपेल दीलासा मुज फळशो क्यारे
ओ ! नाथ–२

निहाळु नाथ घणा रुपमां वसे छे मन मारु तुजमां
स्वप्न मही आपेलां वचनो मुज फळशो क्यारे
ओ ! नाथ–३

नयनमां मार्ग नथी सूझतो प्रभो पळ मात्र नथी भूलतो
दर्शावेलां स्वरुप प्रभोश्री मुज फळशो क्यारे
ओ ! नाथ–४

घडीभर बचन नथी भूलतो सदा तुज तान मही झूलतो
कृपासिंधु ए दिव्य लीलाओ मुज फळशो क्यारे
ओ ! नाथ–५

पुरो विश्वास प्रभो त्हारो दया आ दीन परे धारो
तलसाव्या विण कोल प्रभुश्री मुज फळशो क्यारे
ओ ! नाथ–६

विरहथी अश्रुअति सारुं रडे छे हृदयसदा मारु
विरह तणां दुःख शांत करीने मुज फळशो क्यारे
ओ ! नाथ–७

हवे तो धीरज नथी रहेती बधी शक्ति तुजमां वहेती
कोल मुजब आ दीन बाळकना मन वसशो क्यारे
ओ ! नाथ–८

गुरुश्री भेद सहु खोलो, हृदयथी आप हवे बोलो
किंकर कहे प्रभु कोल प्रमाणे मुज फळशो क्यारे
ओ ! नाथ–९

काव्य ४९

कवालो

अजब माया छे प्रभुनी कोइ जगमां कळी शके नहि
ज्योत झळके चोदीशामां कोइ माया कळी शके नहि–१

देव के देवो न जाणे कोइ माया नहि पिछाणे
पंडितो नहि पार पामे कोइ माया कळी शके नहि–२

रोगीओ रोगे पिछाणे भोगीओ भोगे पिछाणे
तत्वने नहि कोइ जाणे कोइ माया कळी शके नहि–३

भेख पहेरी संत केरो जग्तथी रहेतो अनेरो
भव तणो नहि टळे फेरो कोइ माया कळी शके नहि–४

राय नहि जाणे कदापि रंक नहि जाणे कदापि
परमज्ञानी विश्व व्यापी कोइ माया कळी शके नहि–५

तप तपी काया सुकावे नित्य गंगा तीर न्हावे
भक्त बनवा मन मनावे तोय माया कळी शके नहि–६

हृदयना जे रोग टाळे भक्ति नीती मंत्र पाळे
क्षमाथी अंतर पखाळे तोय माया कळी शके नहि–७

दास किंकर तोय भटके नित्य त्हारा मंदिरे
भक्ति वाटे भ्रमण करतां एक दिन जोशुं सही–८

काव्य ५०

कवाली

ए गुरुजी बेवफा मारी कदर त्हें ना कीधी
प्रीती अनादि काळनी अरजी हृदयमां ना लीधी–१

सोहम तणा स्वप्ना मही पुष्पो अविचळ वासतां
ए अमर पुष्पो म्हेंकतां मारी खबर त्हें ना लीधी–२

भूलां भमु संसारमां कर्मो सतावे कारमां
पामु अपारे वेदना शांति अरे त्हें ना कीधी–३

माया तणा सागर मही नैयां हिंचोळा खाय छे
नावी तमे मळ्वा छतां नैयां किनारे ना कीधी–४

मस्ती दिपक झळकी रह्यो   रोशन झबे चारे दिशा
ए रोशनी निरखी छतां   ज्योति भींतरमां ना कीधी–५

तोपण कृपा त्हारी प्रभो   अंतर थकी भूलाय ना
भक्ति सुधा रेल्या छतां   प्याली अरे में ना पीधी–६

आशा छतां त्हारी मने   तारे अगर मारे भले
किंकर दयाभय बाळनी   विनती हृदयमां ना लीधी–७

काव्य ५१ वधाई

राग—कालींगडो

मारा नाथनी वधाइ वाजे छे
दीनानाथनी वधाइ वाजे छे–ए टेक

देश मरुधर गाम मणादर
मात वसुग्रह गाजे छे–मारा १

आहिर कुळमां रत्न प्रकाश्युं
तेज मणीमय भासे छे–मारा २

तोला नंदन नाथ नगीना
विश्वमां डंको वाजे छे–मारा ३

प्रीतम प्यारा नाथ हमारा
घोर गगनमां गाजे छे–मारा ४

बाळक किंकरदास त्हमारा
भक्तिनी भिक्षा मागे छे–मारा ५

मनुष्य जीवनने उन्नत बनाववा आजेज मंगावो

संसारना विषम परितापथी त्राय पामता जीवात्माओने भक्ति अने विशुद्ध जळनी वहेती गंगामां स्नान करावी प्रत्येक रोमने पावन बनावतुं विश्वप्रेमना विशाळ पंथे रचाएल भक्ता भगवानना तरंगोनु पुस्तक मात्र रु. ०-२-० पोस्टेज स्टेम्प बीडनारने भेट तरीके मोकलवामां आवशे.

भारतनु महाम रत्न

आबुना अरण्य जंगलोमां रमण करता पतितपावन योगी गुरुदेव भगवंत श्री विजयशांतिसूरिश्वरजीना झळकता जीवन दिपक साथे काव्यनो भंडार आलेखतुं वैराग्य तरंग अने गुरुकाव्य गुंजननु पाका पुंठा अने ३४१ पेज साथे दळदार पुस्तक अवश्य मंगावो मूल्य रु. ०-१०-० बहारगाम माटे वी.पी. खर्च अलग.

लखो

किंकरदास

फतासानीपोळ नविपोळ

अमदावाद घर नं. ७२